

# पद चालीस का छिपा हुआ इतिहास—संख्या तीस

यहेजकेल संख्या ग्यारह

Jeff Pippenger

2026-09-02

यहेजकेल की पुस्तक में यरूशलेम की 'घेराबंदी' वह 'चिह्न' है जो वह परीक्षा है जिसके द्वारा हमारे अनन्त भाग्य का निर्णय किया जाएगा, क्योंकि वह पशु की मूरत के गठन को चिह्नित करती है।

“प्रभु ने मुझे स्पष्ट रूप से दिखाया है कि पशु की प्रतिमा अनुग्रह-अवधि के समाप्त होने से पहले स्थापित की जाएगी; क्योंकि यही परमेश्वर की प्रजा के लिए वह महान परीक्षा होगी, जिसके द्वारा उनकी अनन्त नियति का निर्णय किया जाएगा। ...”

“यह वह परीक्षा है जिससे परमेश्वर की प्रजा को उनकी मुहर लगाए जाने से पहले होकर गुजरना होगा। जो सब उसके विधान का पालन करके, और जाली सब्त को स्वीकार करने से इनकार करके, परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा सिद्ध करेंगे, वे प्रभु परमेश्वर यहोवा के ध्वज के अधीन पंक्तिबद्ध होंगे, और जीवते परमेश्वर की मुहर प्राप्त करेंगे। जो स्वर्गीय उद्गम के सत्य को छोड़ देंगे और रविवार के सब्त को स्वीकार करेंगे, वे पशु की छाप प्राप्त करेंगे।” Manuscript Releases, volume 15, 15.

जिन मसीहियों ने सेस्तियुस के 'चिन्ह' पर यरूशलेम से पलायन किया, उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उन्हें पहले से चेतावनी दी गई थी और उसके आने पर उन्होंने उस 'चिन्ह' को पहचान लिया था। पशु की प्रतिमा के गठन को पहचानना उन “घटनाओं,” “तैयारियों” और “गतियों” को पहचानना है जो रविवार के कानून तक ले जाती हैं। जो भविष्यवाणीगत तत्त्व उस 'चिन्ह' का निर्माण करते हैं, उन्हें उस चिन्ह के प्रकट होने से पहले ही समझ लिया जाना चाहिए। जब सेस्तियुस ने घेराबंदी आरम्भ की, तब यह सीखने के लिए बहुत देर हो चुकी थी कि वह चिन्ह क्या था।

“पहले ही तैयारियाँ आगे बढ़ रही हैं, और ऐसी गतिविधियाँ प्रगति पर हैं, जिनका परिणाम पशु की प्रतिमा बनाने में होगा। पृथ्वी के इतिहास में ऐसी घटनाएँ घटित की जाएँगी जो इन अंतिम दिनों के लिए भविष्यवाणी की गई भविष्यवाणियों को पूर्ण करेंगी।” Review and Herald, April 23, 1889.

## तैयारियाँ, गतिविधियाँ और घटनाएँ

“तैयारियों,” “गतियों” और “घटनाओं” को परीक्षा से पहले ही पहचान लिया जाना चाहिए।

“जो कुछ परमेश्वर ने भविष्यवाणी-सम्बन्धी इतिहास में अतीत में पूरा होने के लिए निर्दिष्ट किया था, वह पूरा हो चुका है, और जो कुछ अभी अपने क्रम में आनेवाला है, वह भी होगा। परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता दानियेल अपने स्थान पर खड़ा है। यूहन्ना अपने स्थान पर खड़ा है। प्रकाशितवाक्य में यहूदा के गोत्र के सिंह ने भविष्यवाणी के विद्यार्थियों के लिए दानियेल की पुस्तक खोल दी है, और इस प्रकार दानियेल अपने स्थान पर खड़ा है। वह अपनी गवाही देता है, अर्थात् वह जिसे प्रभु ने उसे दर्शन में महान और गंभीर घटनाओं के विषय में प्रकट किया, जिन्हें हमें जानना आवश्यक है, जब हम उनके पूर्ण होने की बिल्कुल देहरी पर खड़े हैं।”

“इतिहास और भविष्यवाणी में परमेश्वर का वचन सत्य और भ्रांति के बीच दीर्घकाल से चले आ रहे संघर्ष को चित्रित करता है। वह संघर्ष अब भी जारी है। जो बातें हो चुकी हैं, वे फिर दोहराई जाएँगी।” Selected Messages, book 2, 109.

हमें “अवश्य जानना” चाहिए “उन महान और गंभीर घटनाओं को, जबकि हम उनके पूर्ण होने की ठीक दहलीज़ पर खड़े हैं।” यह दहलीज़ इस बात को सूचित करती है कि उन घटनाओं की पूर्ति से पहले ही उन्हें समझना हमारे लिए

आवश्यक है।

“परन्तु भविष्यद्वाणी की लेखनी के कठोर रेखांकन इस शांत दृश्य में एक परिवर्तन प्रकट करते हैं। मेम्ने-जैसे सींगों वाला पशु अजगर के स्वर में बोलता है, और ‘पहिले पशु की सारी सामर्थ्य उसके साम्हने काम में लाता है।’ मूर्तिपूजा और पोपशाही द्वारा प्रकट की गई उत्पीड़न की आत्मा फिर से प्रकट की जानी है। भविष्यद्वाणी घोषित करती है कि यह शक्ति ‘पृथ्वी के रहनेवालों से कहेगी, कि वे उस पशु की एक मूरत बनावें।’ [प्रकाशितवाक्य 13:14.] यह मूरत पहिले अथवा चीते-जैसे पशु के लिये बनाई जाती है, जो तीसरे स्वर्गदूत के संदेश में दृष्टिगोचर कराया गया है। इस पहिले पशु के द्वारा रोमी कलीसिया का निरूपण किया गया है, जो एक ऐसी धार्मिक-संस्थागत सत्ता है जो नागरिक शक्ति से विभूषित है और सब मतभेद रखनेवालों को दंड देने का अधिकार रखती है। पशु की मूरत एक अन्य धार्मिक निकाय का प्रतिनिधित्व करती है, जो इसी प्रकार की शक्ति से विभूषित है। इस मूरत की रचना उसी पशु का कार्य है, जिसका शांतिपूर्ण उदय और सौम्य घोषणाएँ उसे संयुक्त राज्य अमेरिका का इतना उल्लेखनीय प्रतीक बनाती हैं। यहीं पोपशाही की एक प्रतिमा पाई जाती है। जब हमारे देश की कलीसियाएँ, विश्वास के उन सिद्धांतों पर एक होकर जिन्हें वे समान रूप से मानती हैं, राज्य को अपने आदेशों को लागू कराने और अपनी संस्थाओं को समर्थन देने के लिये प्रभावित करेंगी, तब प्रोटेस्टेंट अमेरिका रोमी धर्माधिकार-तंत्र की एक मूरत बना चुका होगा। तब सच्ची कलीसिया पर उत्पीड़न किया जाएगा, जैसा परमेश्वर की प्राचीन प्रजा पर किया गया था। लगभग प्रत्येक शताब्दी यह उदाहरण प्रस्तुत करती है कि कलीसिया और राज्य के अधिकारों की रक्षा करने के नाम पर, मानो परमेश्वर की सेवा करते हुए, धर्मान्धता और दुरभाव क्या-क्या कर सकते हैं। वे प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ जिन्होंने सांसारिक शक्तियों के साथ संधि करके रोम के पदचिह्नों का अनुसरण किया है, उन्होंने भी अंतःकरण की स्वतंत्रता को सीमित करने की वैसी ही इच्छा प्रकट की है। सत्रहवीं शताब्दी में इंग्लैंड की कलीसिया के शासन के अधीन हजारों असहमतिवादी सेवकों ने कष्ट उठाए। धर्मनिरपेक्ष सरकारों की ओर से धार्मिक पक्षपात के साथ सदा उत्पीड़न चला आता है।” स्पिरिट ऑफ प्रोफेसी, खंड 4, 277।

पशु की मूर्ति का गठन पहले संयुक्त राज्य अमेरिका में सम्पन्न होता है, और उसके पश्चात संसार में।

“विदेशी राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका के उदाहरण का अनुसरण करेंगे। यद्यपि वह अगुवाई करती है, तौभी वही संकट हमारे लोगों पर संसार के सब भागों में आएगा।” टेस्टिमोनिज़, खंड 6, 395.

313 ईस्वी का मिलान का अध्यादेश उस गठन के आरंभ का प्रतिनिधित्व करता है, और साथ ही यह सातवें-दिन के एडवेंटिस्टों के लिए बंद द्वार की भी पहचान करता है। पश्चिम के कॉन्स्टेन्टाइन और पूर्व के लिसिनियस ने उस अध्यादेश के साथ एक संधि-विवाह जोड़ा, जब कॉन्स्टेन्टाइन ने अपनी सौतेली बहन कॉन्स्टेन्टिया को लिसिनियस को दिया; यह दानिय्येल ग्यारह के भविष्यसूचक इतिहास के भीतर छह संधि-विवाहों की एक भविष्यसूचक रेखा में निरूपित चौथा संधि-विवाह था। पहले दो उत्तर और दक्षिण के बीच युद्धों से संबंधित थे, अगले दो पूर्व और पश्चिम के बीच गृहयुद्ध थे, और अंतिम दो पोपीय कलीसियाई शक्ति और राज्य शक्ति के सांकेतिक विवाह हैं।

एंटियोकस द्वितीय थियोस ने लगभग 252 ईसा पूर्व में टॉलेमी द्वितीय की पुत्री, टॉलेमिक राजकुमारी बेरेनीके से विवाह करने के लिए अपनी पत्नी लाओडिके प्रथम को अलग कर दिया। सेल्यूसिड साम्राज्य के संधि-विवाह उत्तर के राजा और दक्षिण के राजा के बीच संपन्न हुए, जबकि 313 की संधि-विवाह पूर्व के सम्राट और पश्चिम के सम्राट के बीच हुई थी।

252 ईसा पूर्व में एंटियोकस द्वितीय थियोस का संधि-विवाह, सेल्यूसिड साम्राज्य की उस आरम्भिक अवस्था का प्रतिनिधित्व करता था, जो दानिय्येल ग्यारह की दसवीं से सोलहवीं आयतों में निरूपित इतिहास में एक साम्राज्य के रूप में अपने निष्कर्ष तक पहुँची। सेल्यूसिड साम्राज्य के अंतिम इतिहास में एक और संधि-विवाह एंटियोकस तृतीय महान द्वारा सम्पन्न किया गया, जब उसने 193 ईसा पूर्व में अपनी पुत्री क्लियोपेट्रा प्रथम सीरा को, (भविष्यवाणी के इतिहास की सर्वप्रथम क्लियोपेट्रा), टॉलेमी पंचम को दे दिया। उस समय टॉलेमी पंचम लगभग 16 वर्ष का था और क्लियोपेट्रा प्रथम सीरा लगभग 10 वर्ष की थी। उनका विवाह पाँचवें सीरियाई युद्ध के बाद एक कूटनीतिक समझौता

था। दानियेल ग्यारह में उत्तर और दक्षिण के राजा के बीच का अल्फा संधि-विवाह दूसरे सीरियाई युद्ध के अंत का चिह्न था।

भविष्यवाणी के इतिहास की अंतिम क्लियोपात्रा का संबंध पहले जूलियस सीज़र और उसके बाद मार्क एंटनी—दोनों के साथ हुआ। 44 ईसा-पूर्व में जूलियस सीज़र की हत्या के बाद 43 ईसा-पूर्व में द्वितीय त्रिमूर्व का गठन किया गया। उस त्रिमूर्व में तीन पुरुष सम्मिलित थे, और उन तीनों में से एक, मार्कस लेपिडस, को ऑक्टेवियन द्वारा उस त्रिपक्षीय संघ से बलपूर्वक बाहर कर दिए जाने के बाद, पूर्व के मार्क एंटनी और पश्चिम के ऑक्टेवियन के बीच सत्ता-संघर्ष आरंभ हो गया। 40 ईसा-पूर्व में ब्रुंडिसियम में उन दो पूर्वी और पश्चिमी प्रतिद्वंद्वियों के बीच एक संधि की गई। उस संधि में ऑक्टेवियन की बहन ऑक्टाविया और मार्क एंटनी के बीच विवाह भी सम्मिलित था। वह संधि और उसके साथ हुआ विवाह स्थिर न रह सके, और क्लियोपात्रा के साथ मार्क एंटनी के संबंध में पड़ जाने के बाद, उसने 32 ईसा-पूर्व में ऑक्टाविया को तलाक दे दिया। 31 ईसा-पूर्व में एक्टियम के युद्ध में, पूर्व और पश्चिम के साम्राज्य एक ही शक्ति में एकीकृत हो गए, और उसके बाद ऑक्टेवियन ऑगस्टस सीज़र बना, जो रोमी महिमा और सामर्थ्य की पराकाष्ठा का प्रतीक था।

भविष्यवाणी की दृष्टि से, दानियेल ग्यारह का पहला संधि-विवाह उत्तर और दक्षिण के राजाओं के बीच हुआ था, जिसका प्रयत्न उन दोनों युद्धरत पक्षों के बीच शत्रुता का अंत करना था, जो सिकन्दर महान के साम्राज्य को पुनः स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। सेल्यूसिडों और मिस्र के टॉलेमियों के बीच हुआ वह पहला संधि-विवाह, सेल्यूसिड और टॉलेमिक राज्यों का अल्फा संधि-विवाह था, जो उन्हीं दो शक्तियों के बीच होने वाले ओमेगा संधि-विवाह का प्रतीकात्मक पूर्वरूप था। अंतिम, अथवा ओमेगा, संधि-विवाह में मिस्र के इतिहास की सर्वप्रथम, अथवा अल्फा, क्लियोपात्रा अंतिम, अथवा ओमेगा, क्लियोपात्रा के लिए भविष्यवाणीगत कड़ी बन गई; जिसका मरकुस अन्तोनियुस के साथ संबंध, ऑक्टाविया और मरकुस अन्तोनियुस के तलाक के लिए संदर्भ-बिंदु बन गया। उस तलाक ने पूर्व के मरकुस अन्तोनियुस और पश्चिम के ऑक्टावियन के बीच नवीकृत शत्रुता को चिह्नित किया, जिसका अंत 31 ईसा पूर्व में एक्टियम के युद्ध पर हुआ।

40 ईसा पूर्व में ब्रुंडिसियम की संधि-विवाह पूर्व और पश्चिम के बीच संघर्ष का अल्फा संधि-विवाह था, ठीक वैसे ही जैसे लाओदीके और अन्तियोकुस II थियो का संधि-विवाह उत्तर और दक्षिण के बीच संघर्ष का अल्फा था। 313 का संधि-विवाह, मरकुस अन्तोनियुस और ऑक्टाविया के अल्फा संधि-विवाह के लिए ओमेगा था, ठीक वैसे ही जैसे टॉलेमी V और क्लियोपात्रा I साइरा के बीच संधि-विवाह उत्तरी और दक्षिणी राज्यों का ओमेगा संधि-विवाह था। वे तीन संधि-विवाह जो 313 के ओमेगा संधि-विवाह तक ले गए, सब परस्पर संरेखित हैं, और मिलान की आज्ञप्ति से संबद्ध भविष्यवाणीगत विशेषताओं के लिए तीन गवाह प्रदान करते हैं। एक साथ, पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण के चार शाब्दिक संधि-विवाह पोपतंत्र के दो प्रतीकात्मक संधि-विवाहों के साथ संरेखित होते हैं।

496 में, फ्रैंक्स के राजा क्लोविस का विवाह क्लोटिल्डा से हुआ। क्लोटिल्डा बर्गंडी की एक राजकुमारी थी, बर्गंडी के राजा चिल्पेरिक द्वितीय की पुत्री। अपने पिता और माता की पारिवारिक सत्ता-संघर्ष में हत्या कर दिए जाने के बाद, वह अपने चाचा के संरक्षण में रही, और फिर 493 में फ्रैंक्स के राजा क्लोविस प्रथम के साथ उसका विवाह कर दिया गया। वह कैथोलिक थी, अर्थात् वह रोमी कलीसिया के नाइसिन/रूढ़िवादी विश्वास को मानती थी। इससे वह उस समय के अनेक अन्य जर्मनिक राजपरिवारों से भिन्न ठहरती थी, जो एरियन मसीही थे। उसकी माता कैरेतेना कैथोलिक थी, और क्लोटिल्डा का पालन-पोषण उसी विश्वास में हुआ था। उसे इस बात के लिए स्मरण किया जाता है कि वह क्लोविस से निरन्तर आग्रह करती रही कि वह मूर्तिपूजा को त्याग दे और कैथोलिक बपतिस्मा ग्रहण करे; और इसके पश्चात 496 में उसका परिवर्तन फ्रांस के आरम्भिक इतिहास तथा पश्चिमी तथाकथित मसीहियत के इतिहास की अत्यन्त महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है।

क्लोविस ने यह प्रतिज्ञा की कि यदि वह टोल्बियाक के युद्ध में विजय प्राप्त करेगा, तो वह क्लोटिल्डा के कैथोलिक विश्वास को ग्रहण करेगा और बपतिस्मा लेगा। अलेमानी राजा मारा गया, उनकी सेना टूट गई, और फ्रैंकों ने विजय

प्राप्त की। विजय के पश्चात क्लोटिल्डा ने रेंस के बिशप रेमिजियुस द्वारा क्लोविस को शिक्षा दिलाने की व्यवस्था की, और उसका बपतिस्मा हुआ (परंपरानुसार 496 के क्रिसमस दिवस पर), उसके साथ उसके कई हजार योद्धाओं का भी।

क्लोविस फ्रैंकों का राजा था, जो आधुनिक शब्दावली में फ्रांस का राजा कहलाता है। वह यूरोप के उन राजाओं में प्रथम बना, जिन्होंने अंततः अपने बुतपरस्त धर्म का परित्याग करके कैथोलिक धर्म ग्रहण किया। इसी कारण क्लोविस को “कैथोलिक कलीसिया का ज्येष्ठ पुत्र” माना जाता है, और फ्रांस को “कैथोलिक कलीसिया की ज्येष्ठ पुत्री” कहा जाता है। 1980 में, जब पोप जॉन पॉल द्वितीय ने फ्रांस की यात्रा की, तो उन्होंने पूछा, “फ्रांस, कलीसिया की ज्येष्ठ पुत्री, क्या तू अपने बपतिस्मा के प्रति विश्वासयोग्य है?”

क्लोविस का नाइसीन कैथोलिकवाद में परिवर्तन एक प्रतीकात्मक विवाह-यात्रा के आरंभ को चिह्नित करता है, जो 538 के प्रतीकात्मक संधि-विवाह तक ले जाती है। क्लोविस और उस वेश्या के बीच का प्रतीकात्मक संधि-विवाह, जो पृथ्वी के राजाओं के साथ व्यभिचार करती है, दानिय्येल ग्यारह में वर्णित पूर्ववर्ती चार संधि-विवाहों द्वारा प्रतिरूपित किया गया था। क्लोविस रोमी कलीसिया को सैन्य और आर्थिक समर्थन प्रदान करने वाला पहला यूरोपीय राजा था, और इसलिए दानिय्येल ग्यारह के इतिहास में क्लोविस का प्रतिनिधित्व किया गया है।

और उसकी ओर से सेनाएँ खड़ी होंगी, और वे सामर्थ्य के पवित्रस्थान को अशुद्ध करेंगी, और नित्य बलिदान को हटा देंगी, और उजाड़ करनेवाली घृणित वस्तु को स्थापित करेंगी। दानिय्येल 11:31.

496 में क्लोविस यूरोपीय राजनीतिक संरचनाओं के उस आरंभ को चिह्नित करता है, जो पोपसत्ता के सामर्थ्य में उदित होते समय उसकी सहायता करने के लिए “उठ खड़ी” होंगी। यह एक प्रतीकात्मक विवाह-यात्रा के आरंभ को भी चिह्नित करता है। पद की “भुजाएँ” “बल के पवित्रस्थान” को भी अपवित्र करेंगी, जो मूर्तिपूजक तथा पोपीय—दोनों प्रकार के रोम के लिए—रोम नगर ही है।

## दो पवित्रस्थानों का

दानिय्येल की पुस्तक में दो भिन्न इब्रानी शब्द हैं जिनका अनुवाद “पवित्रस्थान” किया गया है। इब्रानी शब्द ‘miqdash’ और ‘qodesh’ दोनों का अनुवाद “पवित्रस्थान” किया गया है, परन्तु qodesh केवल किसी पवित्र सत्ता का ही द्योतक हो सकता है, जबकि miqdash प्रसंग के अनुसार या तो पवित्र अथवा अपवित्र पवित्रस्थान का द्योतक हो सकता है।

इकत्तीसवें पद में “सामर्थ्य का पवित्रस्थान” ‘miqdash’ है और यह रोम की सामर्थ्य के पवित्रस्थान का प्रतिनिधित्व करता है, जो मूर्तिपूजक तथा पोपीय—दोनों प्रकार के रोम के लिए रोम नगर ही था। एक्टियम के युद्ध से, जब ऑक्टावियन ने साम्राज्य को एकीकृत किया, मूर्तिपूजक रोम तीन सौ साठ वर्षों तक (एक समय) अजेय रहा, जो दानिय्येल ग्यारह के चौबीसवें पद की पूर्ति में था।

वह शान्तिपूर्वक प्रदेश के अति समृद्ध स्थानों में भी प्रवेश करेगा; और वह ऐसा करेगा, जो न उसके पितरों ने किया, और न उसके पितरों के पितरों ने; वह उनके बीच लूट, माल, और धन बिखेर देगा; वरन् वह कुछ समय के लिए दृढ़ गढ़ों के विरुद्ध अपनी युक्तियाँ रचेगा। दानिय्येल 11:24।

जब मूर्तिपूजक रोम ने रोम नगर से शासन किया, तब वह अजेय था; परन्तु जब कॉन्स्टैन्टाइन ने 330 में राजधानी को कॉन्स्टैन्टिनोपल स्थानांतरित कर दिया, तब चौबीसवीं आयत का “समय” पूरा हुआ। जब दानिय्येल सात के तीन सींगों में से अंतिम सींग (गोथ) को नगर से निकाल बाहर किया गया, तब 538 में पोपीय रोम ने भविष्यद्वाणी के अनुसार बाइबल की भविष्यद्वाणी के पाँचवें राज्य के रूप में सिंहासन ग्रहण किया। गोथों ने रोम का घेरा डाला था, परन्तु अंततः वे पीछे हट गए, क्योंकि जस्टिनियन के सेनापति बेलिसारियस ने नगर को सुरक्षित कर लिया था। इसके बाद रोमी कलीसिया ने बारह सौ साठ वर्षों तक सर्वोच्च शासन किया, जब तक कि 1798 में नेपोलियन ने पोप को

पदच्युत कर निर्वासन में न भेज दिया।

रोम, “बल का पवित्रस्थान,” “अपवित्र किया गया,” (अपवित्र किया गया, अर्थात् ‘घायल किया गया या विघटित कर दिया गया’), “भुजाओं” के द्वारा, जो नगर के विरुद्ध चल रहे युद्ध से आई थीं, जिसका मुख्यतः प्रतिनिधित्व प्रकाशितवाक्य अध्याय आठ की पहली चार तुरहियों द्वारा किया गया है।

496 के बाद जो इतिहास आगे चला, उसमें रोम नगर को दूषित होते देखा जाएगा, क्योंकि वह रोमी साम्राज्य की शक्ति और महिमा से परिवर्तित होकर रोमन कैथोलिक साम्राज्य की शक्ति और महिमा में चला गया। वे भुजाएँ मूर्तिपूजा के धर्म को, जो इस पद्यांश में “daily” शब्द द्वारा निरूपित है, हटा देंगी, क्योंकि उन्होंने नाइसिन कैथोलिकता के धर्म को स्वीकार कर लिया।

वूय्ये के युद्ध में, क्लोविस ने अलारिक द्वितीय के अधीन एरियन विसिगॉथों को पराजित किया और अक्विटेन पर अधिकार कर लिया। इस विजय के परिणामस्वरूप, 508 में, पूर्वी सम्राट अनास्तासियुस प्रथम (कॉन्स्टैन्टिनोपल में) ने विसिगॉथों पर उसकी विजय के लिए क्लोविस का सम्मान किया। ग्रेगरी ऑफ़ टूर्स कहता है कि अनास्तासियुस ने क्लोविस के लिए उसे कॉन्सल नियुक्त करने वाले आधिकारिक दस्तावेज़ भेजे। टूर्स में, संत मार्टिन के गिरजाघर में, क्लोविस ने बैंगनी अंगरखा और चोगा धारण किया, अपने सिर पर एक मुकुट रखा, बाहर निकला, और भीड़ पर सोना और चाँदी बिखेरी। ग्रेगरी कहता है कि उस दिन से उसका अभिनंदन कॉन्सल के रूप में किया गया, और रोमी सम्राट द्वारा यह मान्यता दी गई कि क्लोविस पश्चिम में एक वैध मसीही राजा था। एरियन विसिगॉथों को परास्त करने के लिए उसे पुरस्कृत किया गया, जिनका कॉन्स्टैन्टिनोपल भी विरोध करता था। 508 वह वर्ष है जब पूर्व के सम्राट ने सार्वजनिक रूप से कैथोलिक फ्रैंकी राजा का सम्मान किया—एक ही दृश्य में कलीसिया, विजय, और रोमी वैधता। 508 वह वर्ष है जब एरियन विसिगॉथों के शासन को तोड़ने के बाद गॉल में फ्रैंकी कैथोलिक राज्य प्रमुख कैथोलिक शक्ति के रूप में खड़ा हुआ। क्लोविस पहला प्रमुख बर्बर राजा है जिसने एरियन राज्यों के विरुद्ध नाइसिन कैथोलिक धर्म के लिए युद्ध किया, और इस प्रकार “कलीसिया की ज्येष्ठ पुत्री” के रूप में फ्रांस की भूमिका का आदि-प्रतिरूप है। क्लोविस 496 से 508 तक की अवधि का प्रतिनिधित्व करता है और प्रतीकात्मक विवाह-संधि का अल्फा-प्रतीक है। 508 से 538 तक के तीस वर्ष जस्टिनियन द्वारा निरूपित हैं, जो उस जुलूस का ओमेगा-प्रतीक है।

538 में “बाहुओं” ने पोपीय सत्ता को 1260 वर्षों के लिए पृथ्वी के सिंहासन पर स्थापित किया। उसी समय, उस विवाह-यात्रा के समापन पर, जो 496 में आरम्भ हुई थी, वह प्रतीकात्मक संधि-विवाह पूर्ण हुआ। 1798 में, रोम के पोप और फ्रांस के क्लोविस के बीच आरम्भ हुई वह संधि-विवाह, निरस्त कर दी गई, जब फ्रांस के नेपोलियन ने अपने सेनापति से पोप को बंदी बनवाकर पोपीय सत्ता को तलाक दे दिया।

प्रतीकात्मक पोपीय संधि-विवाह का अल्फा, जिसने 496 में अपनी विवाह-यात्रा आरम्भ की थी, 538 में रविवार की व्यवस्था के समय परिपूर्ण हुआ, और इसके पश्चात 1798 में उसका निरस्तीकरण कर दिया गया, ठीक वैसे ही जैसे दानियेल ग्यारह के प्रत्येक अन्य संधि-विवाह का हुआ था। प्रकाशितवाक्य यूरोप के राजाओं और कैथोलिकवाद के पोपों के बीच पोपीय वैवाहिक संबंध में और भी जोड़ता है, क्योंकि प्रकाशितवाक्य बारह का अजगर शैतान भी है और मूर्तिपूजक रोम के राजा भी।

“इस प्रकार, यद्यपि अजगर मुख्यतः शैतान का प्रतिनिधित्व करता है, तथापि गौण अर्थ में वह मूर्तिपूजक रोम का प्रतीक है।” The Great Controversy, 439.

प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना हमें उन तीन बातों के विषय में बताता है जो राजाओं (अजगर) ने कैथोलिकवाद के समुद्री पशु को दीं।

और जो पशु मैंने देखा वह चीते के समान था, और उसके पांव रीछ के पांवों के समान थे, और उसका मुंह सिंह के मुंह के समान था; और अजगर ने उसे अपनी सामर्थ्य, अपना सिंहासन, और बड़ा अधिकार दिया।

प्रकाशितवाक्य 13:2.

496 में, यूरोप के राजाओं ने अपने सैन्य बल और आर्थिक समर्थन के द्वारा निरूपित अपनी “शक्ति” पोपीय पशु को प्रदान करनी आरंभ की। उन्होंने 330 में अपने साम्राज्य की राजधानी को कॉन्स्टैन्टिनोपल स्थानांतरित कर दिया था, जिससे रोम नगर पोपीय अधिकार का “सिंहासन” रह गया। इसके पश्चात “भुजाओं” ने 533 में जस्टिनियन की आज्ञा के द्वारा पोपीय कलीसिया को सभी कलीसियाओं के प्रधान के रूप में चिह्नित किया। उस आज्ञा में उन लोगों पर, जिन्हें पोपसत्ता विधर्मी ठहराती थी, अत्याचार करने हेतु उनके सैन्य बल के प्रयोग का प्रावधान भी सम्मिलित था; इस प्रकार उन्होंने अपनी लौकिक “अधिकारिता” पोपों के हाथों में सौंप दी।

पोपतंत्र और यूरोप के राजाओं के बीच अल्फा-संधि-विवाह 496 में क्लोविस के साथ आरम्भ हुआ। 508 तक, राज्य का विधिसम्मत धर्म रहा मूर्तिपूजक धर्म निकेनीय कैथोलिक मत के पक्ष में अलग रख दिया गया। 533 में, जस्टिनियन ने पोपतंत्र को सभी कलीसियाओं का प्रधान ठहराया, और उनके-उनके सिंहासनों की वैधानिक सत्ता पोपीय शक्ति को समर्पित कर दी।

### अल्फा और ओमेगा आसन

330 में रोम नगर को रोमी कलीसिया के हाथों में छोड़ दिया गया, जहाँ वह मसीह के द्वितीय आगमन पर आग की झील में उसके विनाश तक विराजमान रहेगी। 538 में, वह पुनः आधिकारिक रूप से पोपीय सिंहासन पर विराजमान की गई; इस प्रकार 330 से 538 तक के इतिहास की पहचान एक ऐसे भविष्यद्वाणी-संबंधी कालखंड के रूप में होती है, जो एक alpha आसन से आरम्भ होता है और एक omega आसन पर समाप्त होता है। यह कालखंड बाइबल की भविष्यद्वाणी के चौथे राज्य (Pergamos) के अंत को एक क्रमिक पतन के रूप में प्रस्तुत करता है, जो 330 में आरम्भ होकर Thyatira के आगमन के साथ 538 में समाप्त होता है। 538 के बाद भी पश्चिमी और पूर्वी दोनों रोम का धीमा विघटन जारी रहा, परन्तु यह काल उस आसन दिए जाने से आरम्भ हुआ—जो 330 में पोपाई सत्ता को रोम नगर सौंपे जाने का प्रतीक था—और 538 में वह आसन केवल नगर पर ही नहीं, वरन् उस राज्य पर भी एक सिंहासन बन गया, जिसका प्रतिनिधित्व वह नगर करता था।

330 से 538 तक एक विशिष्ट भविष्यद्वाणीगत अवधि है, जो पापसी के सामर्थ्य-प्राप्ति के ‘आठ’ मार्गचिह्नों को परिभाषित करती है। वे आठ चरण बहुत शीघ्र आने वाले रविवार-विधि के समय पापसी के घातक घाव के चंगे होने में पुनः दोहराए जाते हैं।

आठ चरणों में पहला चरण रोम नगर को पोपीय शक्ति को दिया जाना था, और आठवाँ चरण उस नगर को बाइबिल की भविष्यद्वाणी के पाँचवें राज्य के सिंहासन के रूप में दिया जाना था। इससे 538 की पहचान आसन के रूप में होती है, और ‘आठवें चरण के रूप में, जो पूर्ववर्ती सात चरणों में से है।’ पहला चरण आसन का दिया जाना था और आठवाँ चरण भी आसन का दिया जाना था; इस प्रकार, 330 में पहला चरण अल्फा है और 538 ओमेगा है। दो आसन, तीन सींगों का उखाड़ा जाना, नित्य का हटा दिया जाना, क्लोविस का परिवर्तन और जस्टिनियन की आज्ञा—ये सब मिलकर कुल आठ चरण होते हैं, जो विवाह-यात्रा की पहचान कराते हैं, और अन्ततः विवाह की भी।

1798 में, फ्रांस ने—वह शक्ति जिसने उन दस यूरोपीय राजाओं का प्रतिनिधित्व किया था और जिसने 538 में पोपतंत्र को सिंहासन पर स्थापित किया था—उसी पोपतंत्र को उसी सिंहासन से उतार दिया। 538 से 1798 तक के इतिहास में चित्रित अल्फा-संधि-विवाह, प्रकाशितवाक्य सत्रह के दस राजाओं के साथ पोपीय शक्ति के ओमेगा-संधि-विवाह का प्रतिरूप है। 496 से 538 तक की विवाह-यात्रा आठ चरणों का प्रतिरूप प्रस्तुत करती है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के अंतिम आठ राष्ट्रपतियों के साथ संरेखित होते हैं। क्लोविस और फ्रांस उन दस यूरोपीय राजाओं के प्रतीक हैं। वे संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो शीघ्र आने वाले रविवार-विधि के समय प्रकाशितवाक्य सत्रह के दस राजाओं का प्रमुख राजा बन जाएगा।

दानियेल ग्यारह के पूर्ववर्ती पाँच संधि-विवाह उत्तरकाल के छठे और अंतिम संधि-विवाह के साथ समांतर मेल रखते हैं। उत्तर और दक्षिण के अल्फ़ा और ओमेगा संधि-विवाह दक्षिण से आई दुल्हन को अल्फ़ा के रूप में चिह्नित करते हैं, और ओमेगा उत्तर से आई दुल्हन है। अन्यजातीय रोम के संधि-विवाहों में, पूर्व से आई अल्फ़ा दुल्हन पश्चिम को दी गई थी, और 313 का ओमेगा पश्चिम से आई एक दुल्हन थी। वे चारों विवाह भविष्यवाणी की दृष्टि से क्लियोपेट्रा प्रथम और क्लियोपेट्रा अंतिम के द्वारा परस्पर जुड़े हुए हैं। पोपीय रोम के प्रतीकात्मक संधि-विवाह में दूल्हे का प्रतिनिधित्व दस राजाओं के एक भविष्यवाणीगत संघ के प्रधान राजा के रूप में किया गया था, जो अपनी दुल्हन—रोम की किरमिज़ी स्त्री—के साथ जुड़ता है। तलाक 1798 में उन दस राजाओं के प्रधान राजा के द्वारा संपन्न किया गया।

313 की संधि-विवाह, पोपीय शक्ति के संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ अंतिम संधि-विवाह का प्रतिनिधित्व करती है—प्रकाशितवाक्य सत्रह के दस राजाओं में प्रधान राजा; एक दो-सींगवाली शक्ति, जिसका प्रतिरूप फ़्रांस की दो-सींगवाली शक्ति द्वारा प्रस्तुत किया गया है। जो इतिहास 496 में क्लोविस से आरम्भ हुआ और अंततः 533 में जस्टिनियन की आज्ञा तथा 538 में पोपतंत्र के सिंहासनारोहण तक पहुँचा, वह 1989 से लेकर रविवार के कानून तक के इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है।

हम इन बातों को अगले लेख में जारी रखेंगे।